खत पहुँचे सक्को को

प्यारी सक्को,

स्कूल के सामने एक पीपल का पेड़ है। जहाँ पे एक डोकरी बैठती है। आराम करने के लिए नहीं, उबली हुई बेर बेचती है वो। मम्मी से रोज़ दो रुपए लेकर जाती हूँ। और मज़े से खाती हूँ। पीपल के नीचे सँभल के जाना पड़ता है। ज़मीन पर धूल कम चींटे ज़्यादा हैं। काट लें तो देर तक जलन होती रहती है। चींटे तो मुफ्त का खाते हैं। पीपल अपने फल के बदले उनसे पैसे थोड़ी लेता है। तुम यह तो नहीं समझ रही कि मैं चींटे खाने के दो रुपए लाती हूँ। मैं उबली हुई बेर की बात कर रही हूँ। वहाँ सामने जो दुकान थी, उसमें टॉफी-बिस्किट मिलते थे पर उनमें वो मज़ा नहीं था।

तुम भी अपने पापा से बोलो यहीं आके रहने लगें। मेरी एक नई दोस्त बनी है, काजल। नाम की नहीं, सच्ची में काली है। शायद मुँह में खोपरे का तेल नहीं लगाती होगी। मेरी दादी ने बताया था कि ये वाले तेल से गोरे हो जाते हैं।

तुम समझ रही हो ना कि मैं अपने नए स्कूल की बात कर रही हूँ। वहाँ पे क्या चल रहा है? क्या हिन्दी वाली मेडम अब भी हर बात के बाद "ठीक है ना" बोलती हैं। उधर की तरह इधर भी सब बोलते हैं कि पढ़ोगे तो समझदार बन जाओगे। मुझे तो स्कूल जाते छह साल हो गए, पर किसी से पूछो कि ठण्ड में कुत्ते के पिल्ले बिना रजाई के कैसे रह लेते हैं, तो बोलते हैं, "चुप रहो! अभी तुम नासमझ हो।" तुमने बताया था कि तुम्हारी नानी बहुत समझदार हैं। वो तो कभी स्कूल नहीं गईं। पता करके बताना क्या खाती हैं?

अरे हाँ, तुम पोस्टकार्ड में पते के बाजू वाली जगह खाली क्यों छोड़ती हो?

तेरी दोस्त
गिन्नी

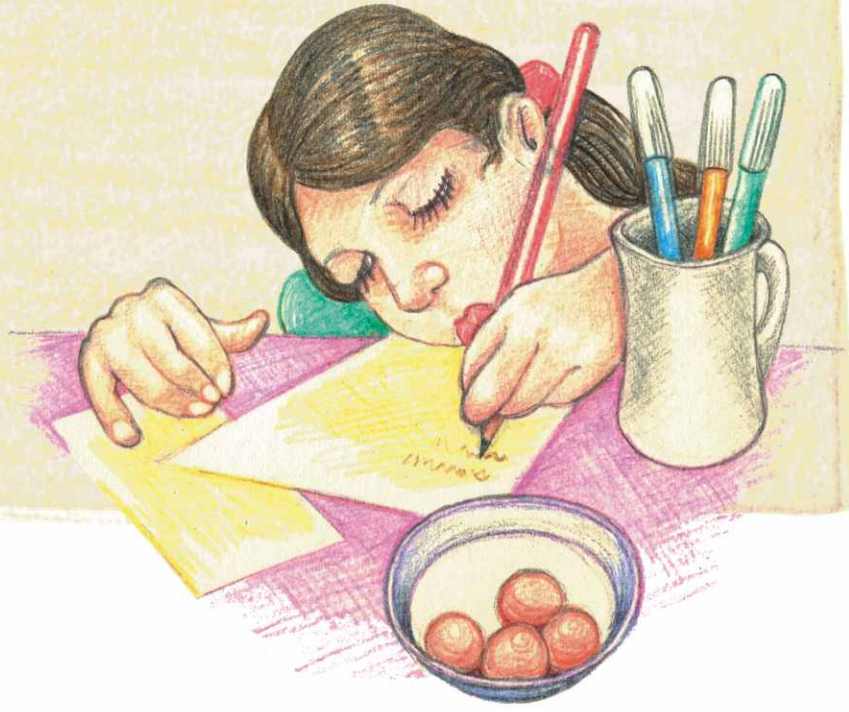

चन्दन यादव